JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बुन्देलखण्ड में सागर संभाग के ग़ज़लकारों का ग़ज़ल साहित्य में योगदान

डॉ. कुंजीलाल पटेल,
शोध निर्देशक,
सह प्राध्यापक (हिन्दी विभाग)
हिन्दी अध्ययनशाला एवं शोधकेंद्र
महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड
विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

अरमान अहमद,
पी.एच.डी.शोधार्थी,
(हिन्दी विभाग)
हिन्दी अध्ययनशाला एवं शोधकेंद्र
महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड
विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सार –

बुन्देलखण्ड भारत का वह क्षेत्र है जिसकी ख्याति प्राचीन काल से ही रही। इसमें उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश दोनों का कुछ भू–भाग सम्मिलित है। यहाँ लोक साहित्य और साहित्य की अनेक विधाओं में अनेक प्रसिद्ध रचनाकारों ने रचना की। संस्कृत, हिन्दी, उर्दू और बुन्देली के कई प्रसिद्ध रचनाकारों की ये जन्मस्थली और कर्मस्थली रही। हिन्दी में केशवदास, तुलसी, बुन्देली में ईसुरी तो उर्दू में मंज़र टीकमगढ़ी इसी क्षेत्र की विभूतियाँ हैं। लोक साहित्यिक विधाओं में यहाँ पहले–पहल लोकगीतों की परम्परा ही मिलती है, जो वाचिक परम्परा में आज तक चली आ रही है। आधुनिकता की दौड़ में यह धरोहरें विलुप्त न हो जाएं इसलिए कुछ साहित्यकार इनके संकलन के लिये कटिबद्ध हैं। डॉ.कुंजीलाल पटेल 'मनोहर' जी ने भी इनके संकलन और प्रकाशन में महती भूमिका निभाई है। बुन्देलखण्ड के सागर संभाग में भी साहित्य रचना की दीर्घ परम्परा रही और यहाँ की क्षेत्रीय बोली पर मराठी और अरबी–फारसी का भी प्रभाव पड़ा। हिन्दी में दोहा, चौपाई, बुन्देली में फागें, कवित्त, खड़ी फाग आदि के प्रचलन के साथ–साथ उर्दू मिश्रित हिन्दी में आधुनिक ग़ज़लों का भी प्रचलन है। जिस ग़ज़ल साहित्य का प्रारंभ अमीर खुसरो ने किया और फिर बाद में जिसके संवर्धन और विकास में दुष्यंत कुमार ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया उसी लेखन परम्परा को आगे बढ़ाने में सागर संभाग के ग़ज़लकारों का योगदान भी अविस्मरणीय है।

मूल शब्द – बुन्देलखण्ड, सागर, ग़ज़ल।

प्रस्तावना –

भारतीय इतिहास में बुन्देलखण्ड राज्य प्रारंभ से ही ख्यातिलब्ध रहा है। इसमें उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के कुल 13 जिले आते हैं। वीरता और शौर्य की बात हो या साहित्य रचना की यह क्षेत्र सदा ही अग्रणी रहा है। यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य भी अतुलनीय है।

बुन्देलखण्ड में हिन्दी, उर्दू और बुन्देली के अनेक रचनाकार और शायर पैदा हुए हैं। इसे निम्न उद्धरण से प्रमाणित किया जा सकता है–

''इस ज़रख़ेज़ ख़ित्ते में उर्दू, हिन्दी संस्कृत की कई अदबी (साहित्यिक) शख़्सियत भी पैदा हुई हैं, जिनमें जगनिक, भूषण, बिहारी, तुलसी, केशव, ईसुरी, मुंशी अजमेरी, पद्माकर, मैथिलीशरण गुप्त, और उर्दू में क़ाबिल, हमा, तपिश, ताबाँ, पनाह, नय्यरूद्दीन, नबी दाद खाँ, सलाम सागरी, दिलकश–सागरी, उबैदुल्लाह मुत्तकी, अरशद सागरी, हैरत दमोही और मंज़र टीकमगढ़ी शामिल हैं।''[1]

बुन्देलखण्ड की धरती पर जनश्रुति के अनुसार संस्कृत के आदि कवियों महाकवि बाल्मीकि और वेदव्यास ने अपना काव्य रचा। बुन्देलखण्ड में संस्कृत के बाद हिन्दी भी अपने आरंभिक रूप में ख़ूब फली फूली। कालिंजर नरेश महाराज गंड ने बुन्देलखण्ड में सर्वप्रथम हिन्दी कविता की।

''बारहवीं सदी में कालिंजर के एक मशहूर शायर राजा गंड ने सबसे पहले हिंदी कविता लिखी। इसके बाद महोबा में जगनिक कवि हुए। जिन्होंने आल्हाखण्ड, महोबा खण्ड और पृथ्वीराज प्रीतम जैसी किताबों की तसनीफ़ की।''[2]

बुन्देलखण्ड में बुन्देली में सर्वप्रथम लोकगीतों का ही प्रचलन हुआ। क्षेत्रीय बोली पर मराठों और मुग़लों के आगमन से मराठी, अरबी–फ़ारसी का प्रभाव पड़ा। अतः भाषा की दृष्टि से इसे हम हिन्दुस्तानी कह सकते हैं जिसमें आगे चलकर अनेक विधाओं में रचना की गई।

''बुन्देली में जो मक़ामी अदब (लौकिक साहित्य) मिलता है उसमें फड़ अदब (साहित्य) और लोकगीत हैं। 'फड़' असल में संस्कृत लफ़्ज़ 'पट' से निकला है। जिसके मानी (अर्थ) जमाव या मुक़ाबला के हैं। बुन्देलखण्ड का ये अदब एक ज़माने से मक़बूल है। ऋतु गीत–पावस, झूला, हिंडोला, राछरा, सैरा, फागें, होली की साखें, फागें ईसुरी की, फागें, आख्यानक, रसया, स्वांग, ख्याल, अनबोलना, राई, ढिमरयाई, लड़कियों के खेल के गीत, कचरया बोलने के गीत, लोंग बोलने के गीत वगैरह।''[3]

इन क्षेत्रीय विधाओं के अलावा लोक मानस के पटल पर तुलसीदास, कबीर, रहीम के दोहे–चौपाई और अमीर खुसरो की पहेलियाँ, मुकरियाँ, दो सुखने और ग़ज़ल अंकित थे, जिन्हें बुन्देलखण्ड के और सागर संभाग के लोग बोलते और समझते थे।

हिन्दी ग़ज़ल का आरंभ तो अमीर खुसरो से ही हो गया था, उसके बाद धीरे–धीरे ग़ज़ल विधा फलती–फूलती रही उसके प्रयोग अनेक भाषाओं में हुए। फ़ारसी और उर्दू के अलावा बुन्देली में भी ग़ज़लें लिखी गईं। बुन्देलखण्ड के सागर संभाग के ग़ज़लकारों ने इसमें अपना योगदान दिया। इन ग़ज़लकारों के समय को कालक्रमानुसार हम तीन भागों में बाँट सकते हैं–

1. सन् 1900 से 1950 तक।
2. सन् 1950 से 2000 ई. तक।
3. सन् 2000 ई. से आज तक।

सागर संभाग में छः जिले सागर, छतरपुर, टीकमगढ, निवाड़ी, दमोह और पन्ना आते हैं। इक्कीसवीं सदी में इस क्षेत्र के छतरपुर और टीकमगढ़ जिले के कई ग़ज़लकारों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है उनमें हशमत छतरपुरी और मौलाना हारून अना क़ासमी साहब छतरपुर से तथा हाजी हत्रफ़रउल्ला 'ज़फ़र' और राजीव नामदेव 'राना' टीकमगढ़ से संबंध रखते हैं।

विषयवस्तु–

1. **ग़ज़लकार – हशमत छतरपुरी**

नाम	–	**सैयद हशमत अली**
जन्मतिथि	–	14 मई 1945 ई.
जन्मस्थान	–	चरखारी (उ0प्र0)
शिक्षा	–	बी.ए.
रचना	–	उजाला अपनी आँखों का (ग़ज़ल संग्रह)

हशमत छतरपुरी का जन्म चरखारी जिला महोबा में हुआ किंतु उनकी शिक्षादीक्षा जिला छतरपुर में ही हुई, और छतरपुर का नाम उनके नाम के साथ जुड़कर उनकी पहचान बन गया। उन्होंने अपनी साहित्यिक यात्रा भी यहीं से प्रारंभ की। उनकी ग़ज़लों में वर्ण्य विषय की विविधता है।

वर्तमान समय में मनुष्य की विष्वासघाती प्रवृत्ति को लक्ष्य करते हुए वे लिखते हैं–

''हाथ में पत्थर दिल में नफ़रत, जेब में खन्जर रखते हैं।
मत पूछो इस दौर के इसाँ क्या–क्या जौहर रखते हैं।।''[4]

आज के समय के लोग यदि किसी निर्धन की मदद भी करते हैं तो किस तरह से करते हैं –

''मजबूरों को मुख्तारों ने भीख भी दी तो ऐसे दी।

शमअ उगल दे जैसे आतिश परवानों के दामन में।।''[5]

निडर और साहसी व्यक्ति सत्य बात कहने में किसी का भी भय नहीं रखते–

'' वो जानता था तीर चढ़ा है कमान पर,
हक़ बात फिर भी आ गई उसकी ज़बान पर।
उस से मसालहत मैं करूंगा कभी नहीं,
होगा लहू का ज़ायक़ा जिसकी ज़बान पर ।।[6]

श्रंगारिक पंक्तियों में विरह की टीस दिखाती हुई पंक्तियाँ–

''भूल जा उन्हें ऐ दिल क्यों फ़रेब खाता है,
जो कभी नहीं आए वो कभी न आएँगे ।।[7]

भुखमरी और बेरोज़गारी की समस्या का वर्णन करती हुई निम्न पंक्तियाँ देखें–

''भूख और बेकारी जितना सर उठाएगी।
उतना लोग रेलों की पटरियों पर आएंगे।।[8]

आपने उस्ताद शायर कैफ़ भोपाली से अपनी ग़ज़लों में प्रभाव ग्रहण किया है।

''इसी बीच क़ैफ़ भोपाली का छतरपुर आगमन प्रारंभ हुआ जिनका प्रभाव इन्होंने स्वीकार किया और इनकी शायरी में सौंदर्य का कारण बना। ये 30 वर्षों से आकाशवाणी छतरपुर से वाबस्ता रहे। दूरदर्शन के भी कई कार्यक्रमों में सहभागिता कर चुके हैं। स्थानीय और देश की असंख्य पत्रिकाओं में इनकी कवितायें प्रकाशित होती रही हैं।[9]

2. **ग़ज़लकार** – **''अना कासमी''**
नाम – **मौलाना हारून 'अना'**
जन्म तिथि – 28 फरवरी 1966
जन्म स्थान – छतरपुर, (म.प्र.)
शिक्षा – नदवतुल उलमा, लखनऊ से आलिमियत
1989 में दारूल उलूम देवबंद से फ़ज़ीलत की डिग्री
रचना – हवाओं के साज़ पर (ग़ज़ल संग्रह)

मौलाना हारून 'अना' ने ग़ज़ल को नए आयाम दिए हैं। छतरपुर ज़िले की गंगा–जमुनी संस्कृति में हिन्दी और उर्दू का अनोखा सामंजस्य इनकी ग़ज़लों में देखने को मिलता है।

समाज में व्याप्त भ्रष्टाचारी व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए आप कहते हैं :–

वफ़ा शियारो उठो दार ने सदा दी है।
कुसूरवार न जाये तो बेक़सूर चलें।।[10]

अब समाज में अवगुणों की गिनती भी गुणों में होने लगी हैं :–

गलतियाँ भी खूबियों में अब गिनी जाने लगीं।
इस नई तहज़ीब ने ऐसे संवारी गलतियाँ।। [11]

आज के समाज में स्वार्थी मनुष्य की प्रवृत्ति पर व्यंग्य करते हुए आप लिखते हैं :–

मिरी तबाही का वो ही इरादा रखते हैं।
मुझी से जो शरफ ए इस्तिफ़ादा रखते हैं।।[12]

देश और मातृभूमि से असीम प्रेम और श्रद्धा का भाव निम्न पंक्तियों में दृष्टव्य है–

तमाम रिष्ते भुलाकर मैं काट लूँगा इन्हें।
अगर ये हाथ कभी मादरे वतन तक आए।।[13]

धार्मिक एकता का जीवंत उदाहरण देती हुई निम्न पंक्तियाँ जिनमें वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बढ़ती हुई असहिष्णुता को झिंझोड़ा गया है।

मैं भी कह दूँ जो मिरी बात न टाली जाये।

अब ये बुराक दशहरे में निकाली जाये।।[14]

इंसान अपना जीवन पैगम्बर मुहम्मद साहब की जीवन शैली के अनुसार ढालकर शांत रस प्राप्त करें–

ये ज़िंदगी जो इक अमानत खुदा की है।

इसको रसूले पाक की सुन्नत में ढाल दें।। [15]

हारून 'अना' जी की भाषा आम बोलचाल की नहीं है किंतु उसमें कथ्य की अपेक्षा भाव प्रधान है। जिससे इन शेरों में वर्णित कथ्य को जिसने भोगा है वह खूब समझ सकता है।

''अना क़ासमी की दोस्ती का दायरा इतना फैला हुआ है कि हर समाज और हर दायरे के लोग हमने इनके दोस्त देखे हैं। शायद इसीलिए इनकी शायरी में तरह–तरह की टीस और तरह–तरह के सुख का अनुभव देखने को मिलता है।

जैसे– ''सबकी अपनी अलग कहानी है।

ये करोड़ों जुदा–जुदा चेहरे ।।''[16]

3. ग़ज़लकार – ज़फ़रउल्ला खाँ ''ज़फ़र''

नाम	–	**ज़फ़रउल्ला खाँ**
जन्म तिथि	–	10.07.1937
जन्म स्थान	–	टीकमगढ़
शिक्षा	–	मैट्रिक
रचना	–	वक़्त की आवाज़ (ग़ज़ल संग्रह)

ज़फ़रउल्ला खाँ ''ज़फ़र'' टीकमगढ़ के ग़ज़लकारों में एक वयोवृद्ध ग़ज़लकार हैं। शिक्षा का आरंभ टीकमगढ़ के मदरसा जामा मस्जिद से हुआ। शेरो–शायरी में शौक होने के कारण साहित्यिक गोष्ठियों में सम्मिलित होते रहे और इसी से अपनी साहित्यिक यात्रा प्रारंभ की। आप आलोचनात्मक लेखन ज्यादा पसंद करते हैं आपने अपने काव्य को मनोरंजन से ही नहीं अपितु उसे जीवन के विभिन्न पक्षों से जोड़ा है।

वात्सल्य रस का उदाहरण देती हुई निम्न पंक्तियाँ जिनमें माँ का पुत्र के प्रति अपार स्नेह दिखाया गया है।

''दूसरों से अपना बच्चा ही प्यारा सा लगे है,
हर माँ को वो तो आँख का तारा सा लगे है।''[17]

अपनी प्रेमिका के मौन को देखते हुए व्यक्ति कैसे धीरज धारण नहीं कर पाता उसका वर्णन निम्न पंक्तियों में हुआ है–

''कुछ तो जुबाँ से बोलो इशारों से कुछ कहो।
बढ़ती हुई धड़कन को मैं क़ाबू में ला सकूँ ।।[18]

जैसी करनी वैसी भरनी कहावत को चरितार्थ करती हुई निम्न पंक्तियाँ देखें–

''किये काम दुनिया में जैसे भी उसने।
उसी का सिला आज वो पा रहा है।।''[19]

अयोग्य व्यक्ति को कोई पद मिल जाने के फलस्वरूप लोगों को होने वाली हानि को लक्ष्य करते हुए आप लिखते हैं–

''रोटी छिनी किसी की तो कुछ की गई रोज़ी,
ऐसा कभी तूफान न आया है शहर में।
वो कुछ दिनों का ही यहाँ मेहमान रहेगा,
ऐसा तो सांड रह नहीं पाया है शहर में।।[20]

ज़फ़र टीकमगढ़ी की ग़ज़लों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण हुआ है।

''ये मजमूआ–ए– ग़ज़ल, नज़्म, मुनाजात, एवं कतात पर मुष्तमिल है। नज़्म में शायर ने नज़्म की तीनों किस्मों का इस्तेमाल किया है। जहाँ कहीं पाबंदी नज़्म में उसूलों की पाबंदी के साथ अपनी बात कही है, तो कहीं आज़ाद नज़्म की शक्ल में, लिहाज़ा आपकी नज़में फन्नी एतबार से न देखते हुए अगर प्रेक्टीकली एतबार से देखी जाये तो इसमें सच्ची कड़वाहट नज़र आयेगी''[21]

4. ग़ज़लकार – राना लिधौरी

नाम	–	**राजीव नामदेव**
जन्म तिथि	–	15.06.1972
जन्म स्थान	–	लिधौरा जिला–टीकमगढ़ (म.प्र.)

शिक्षा – बी.एस.सी. (कृषि), एम.ए. (हिन्दी)

रचना – राना का नज़राना (ग़ज़ल संग्रह)

राजीव 'राना' जी ने काव्य लेखन में पहले हाइकू और कविताएं लिखीं। उन्होंने बुन्देली में भी लेखन किया है। राना जी ने ग़ज़ल किसी उस्ताद शायर की निगरानी में नहीं बल्कि उनके साहित्यिक मित्रों के प्रोत्साहन में लिखी हैं। ग़ज़ल की पारम्परिक विषय वस्तु प्रेम और सौंदर्य से इतर आपने ग़ज़ल को सामाजिक परिवेश से जोड़ा है।

वर्तमान में एक तरफ पालतू जानवरों को तो भर पेट भोजन मिलता है तो दूसरी ओर गरीब बच्चे भूख से व्याकुल नज़र आते हैं।

''अफसरों के कुत्ते देखो दूध बिस्कुट खा रहे।

और मुफलिस सूखी रोटी के लिये लाचार है।''[22]

प्रेमी और प्रेमिका दोनों के हृदय में प्रेमाग्नि की बराबरी बताती हुई निम्न पंक्तियाँ देखें–

''रात भर जागता रहा हूँ मैं।

नींद तुमको भी न आई होगी।।[23]

साम्प्रदायिक सद्भावना का उदाहरण देती निम्न पंक्तियाँ देखें–

''रहें मंदिर में या गिरजा में कि मदीने में।

आप के प्यार की खुष्बू है मेरे सीने में ।।[24]

राना के कलाम में वर्ण्य विषय की विविधता है। मनुष्य के सामान्य जीवन के मोतियों को लोक भाषा की माला में पिरोया गया है।

''राना ने अपने इस मजमुआ–ए–ग़ज़ल में ज़िंदगी एवं समाज के लगभग प्रत्येक पहलू पर अष्आर नुमायाँ किये हैं हालाँकि राना जी ने खुद लिखा है कि इन्होंने अपनी ग़ज़लों में महबूबा, माशूका आदि से दूर आज के हालात पर तथा तमाम विषयों पर कलम चलाने की कोशिश की है। लेकिन उन्होंने जिस नज़ाक़त से प्यार, मुहब्बत, जुदाई, वफ़ा और बेवफाई पर अपने जज़्बातों का इज़हार किया है वो भी क़ाबिले तारीफ़ है।''[25]

निष्कर्ष –

बुन्देलखण्ड और विशेषतः सागर संभाग में ग़ज़ल साहित्य में लेखन की परम्परा तो पुरानी है किंतु इस क्षेत्र पर शोध कार्य अधिक नहीं हुआ है। उर्दू में तो कुछ शोध प्रबंध इस विषय पर लिखे जा चुके हैं किंतु हिन्दी में इनका अभाव है। अतः मैंने अनुभव किया कि इस विषय पर हिन्दी में भी शोध कार्य किया जाना चाहिए। जिससे ये साहित्य और साहित्यकार प्रकाश में आएं और इनके द्वारा रचित साहित्य का जनमानस को लाभ मिल सके।

- डॉ. मुहम्मद इदरीस निज़ामी, सागर कमिष्नरी के अहम उर्दू शोअरा ओर उनके कलाम का तहक़ीकी और तनक़ीदी जाइज़ा, शोध प्रबंध डॉ. सर हरि सिह गौर विष्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) प्रथम संस्करण सन् 2000 पृ.क्रं. 5
- डॉ. मुहम्मद इदरीस निज़ामी, सागर कमिष्नरी के अहम उर्दू शोअरा ओर उनके कलाम का तहक़ीकी और तनक़ीदी जाइज़ा, शोध प्रबंध डॉ. सर हरि सिह गौर विष्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) प्रथम संस्करण सन् 2000 पृ.क्रं. 23
- डॉ. मुहम्मद इदरीस निज़ामी, सागर कमिष्नरी के अहम उर्दू शोअरा ओर उनके कलाम का तहक़ीकी और तनक़ीदी जाइज़ा, शोध प्रबंध डॉ. सर हरि सिह गौर विष्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) प्रथम संस्करण सन् 2000 पृ.क्रं. 24
- हशमत छतरपुरी, उजाला अपनी आंखों का बुन्देली विकास संस्थान बसारी जिला छतरपुर (म.प्र.) सन् 2012 पृ.क्रं. 35
- हशमत छतरपुरी, उजाला अपनी आंखों का बुन्देली विकास संस्थान बसारी जिला छतरपुर (म.प्र.) सन् 2012 पृ.क्रं. 4
- हशमत छतरपुरी, उजाला अपनी आंखों का बुन्देली विकास संस्थान बसारी जिला छतरपुर (म.प्र.) सन् 2012 पृ.क्रं. 5
- हशमत छतरपुरी, उजाला अपनी आंखों का बुन्देली विकास संस्थान बसारी जिला छतरपुर (म.प्र.) सन् 2012 उजाला अपनी आंखों का पृष्ठ क्रं0 6
- हशमत छतरपुरी, उजाला अपनी आंखों का बुन्देली विकास संस्थान बसारी जिला छतरपुर (म.प्र.) सन् 2012 पृ.क्रं. 7
- हशमत छतरपुरी, उजाला अपनी आंखों का बुन्देली विकास संस्थान बसारी जिला छतरपुर (म.प्र.) सन् 2012 पृ.क्रं. 41 परिचय के दो शब्द– अब्दुस्सलाम नक़्शबन्दी, छतरपुर द्वारा लिखित।
- अना कासमी, हवाओं के साज़ पर, अयन प्रकाशन महरौली, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2012 पृष्ठ क्रं0 68

- अना कासमी, हवाओं के साज़ पर, अयन प्रकाशन महरौली, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2012 पृष्ठ क्रं0 40
- अना कासमी, हवाओं के साज़ पर, अयन प्रकाशन महरौली, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2012 पृष्ठ क्रं0 43
- अना कासमी, हवाओं के साज़ पर, अयन प्रकाशन महरौली, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2012 पृष्ठ क्रं0 57
- अना कासमी, हवाओं के साज़ पर, अयन प्रकाशन महरौली, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2012 पृष्ठ क्रं0 80
- अना कासमी, हवाओं के साज़ पर, अयन प्रकाशन महरौली, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2012 पृष्ठ क्रं0 78
- हवाओं के साज़ पर– 'अना कासमी,–एक परिचय', डॉ. बहादुर सिंह परमार, छतरपुर द्वारा लिखित।
- हाजी ज़फ़र उल्ला खाँ, वक़्त की आवाज़, नशेमन पब्लिकेशन मारफ़त, टीकमगढ़ (म.प्र.) वर्ष 2010 पृष्ठ क्रं0 49
- हाजी ज़फ़र उल्ला खाँ, वक़्त की आवाज़, नशेमन पब्लिकेशन मारफ़त, टीकमगढ़ (म.प्र.) वर्ष 2010 पृष्ठ क्रं0 43
- हाजी ज़फ़र उल्ला खाँ, वक़्त की आवाज़, नशेमन पब्लिकेशन मारफ़त, टीकमगढ़ (म.प्र.) वर्ष 2010 पृष्ठ क्रं0 107
- हाजी ज़फ़र उल्ला खाँ, वक़्त की आवाज़, नशेमन पब्लिकेशन मारफ़त, टीकमगढ़ (म.प्र.) वर्ष 2010 पृष्ठ क्रं0 110
- वक़्त की आवाज़ – 'समीक्षा', इक़बाल फ़ज़ा जतारवी टीकमगढ़ द्वारा लिखित।
- राजीव नामदेव राना लिधौरी, राना का नज़राना, म.प्र.लेखक संघ टीकमगढ़ (म.प्र.) वर्ष 2015, पृ.क्रं. 10
- राजीव नामदेव राना लिधौरी, राना का नज़राना, म.प्र.लेखक संघ टीकमगढ़ (म.प्र.) वर्ष 2015, पृ.क्रं. 24
- राजीव नामदेव राना लिधौरी, राना का नज़राना, म.प्र.लेखक संघ टीकमगढ़ (म.प्र.) वर्ष 2015, पृ.क्रं. 55
- राना का नज़राना समीक्षा– समीक्षक उमाशंकर मिश्र 'तन्हा', टीकमगढ़ (म.प्र.)